

वर्तमान समय युवाओं को दोहरी भूमिका निभाने की आवश्यकता - बी.के. डॉ. रीना बहन

युवाओं के लिए वेबिनार संपन्न

भोपाल, 24 मई 2020

वर्तमान समय जबकि सारी दुनिया भीषण महामारी से कराह रही है, ऐसे समय में समाज का हर वर्ग अलग-अलग तरह की समस्याओं से जूझ रहा है। बच्चों एवं बूढ़ों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। ऐसे समय में युवा वर्ग को खुद को संभालने के साथ-साथ बच्चों एवं बूढ़ों को भी हिम्मत देनी है। युवाओं को उनके दायित्वों के अलावा अपने परिवार के बच्चे एवं बूढ़ों की सुरक्षा की भी जिम्मेदारी उठानी होगी। साथ ही खुद को गुणों एवं शक्तियों से संपन्न करना होगा। उक्त विचार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, गुलमोहर कॉलोनी सेवा केंद्र प्रभारी बी.के.डॉ. रीना बहन जी ने आज आयोजित युवाओं के लिए ऑनलाइन वेबिनार में व्यक्त किए उन्होंने आगे कहा कि - भारतीय संस्कृति की शिक्षाओं को आगे बढ़ाने की भी जिम्मेदारी युवाओं को उठानी होगी

खानपान को शुद्ध बनाएं

हम सबने देखा कि दूषित खानपान की शैली से भीषण महामारी ने जन्म लिया। अतः अब समय है कि हम अपने खानपान को शुद्ध बनाएं। मांसाहार को छोड़कर शाकाहार अपनायें। मांसाहार करने से हमेशा ही मानव जीवन को खतरा उत्पन्न होता रहेगा। क्योंकि मानव का शरीर मांसाहार हेतु बना ही नहीं है। बल्कि शाकाहारी भोजन को परमात्मा की याद में बनाकर एवं परमात्मा को भोग लगाकर खाने से वह मन एवं शरीर को ऊर्जा से भर देता है। आज की युवा पीढ़ी को इस कार्य में आगे आना होगा एवं शाकाहार व्यंजन के फायदों को सारी दुनिया में प्रत्यक्ष करना होगा।

युवाओं को वैचारिक शुद्धता भी धारण करनी होगी।

मन में अनेक तरह के निगेटिव एवं व्यर्थ संकल्प आने के कारण अनावश्यक रूप से शरीर की ऊर्जा नष्ट होती है। वर्तमान समय महामारी को लेकर दिनभर अनेक तरह के संकल्प चलाने से युवाओं की ऊर्जा नष्ट हो रही है। साथ ही घर में भी भविष्य के प्रति भय एवं असुरक्षा का माहौल बन रहा है। युवाओं की जिम्मेदारी है कि सकारात्मक सोच एवं बातों के द्वारा स्वयं एवं परिवार के बीच एक अच्छा वायुमंडल बनाने का बीड़ा उठाएँ।

युवा सोशल मीडिया का सोच समझकर प्रयोग करें।

वर्तमान समय सोशल मीडिया में कोरोना महामारी को लेकर संदेशों की बाढ़ सी आई हुई है। ऐसे व्यर्थ की पोस्ट के कारण युवाओं के मन में नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। युवाओं का समय एवं शक्ति दोनों व्यर्थ जा रही है। अतः युवाओं को सोशल मीडिया का प्रयोग सकारात्मक कार्यों के लिए करना होगा। सोशल मीडिया एवं वीडियो की भड़चाल से बचना होगा।

महामारी से बचना भी है और बचाना भी है।

जैसा कि कहा जा चुका है कि आने वाले समय में हमें कोरोना महामारी के साथ रहना सीखना होगा। ऐसे समय युवाओं को सरकार के नियमों का खुद पालन करके चलना होगा। साथ ही घर के लोगों को भी नियमों पर चलाना होगा। क्योंकि आगे की जिन्दगी और दुनिया पहले जैसे नहीं रहने वाली है।

आगे आने वाले समय में हमारा उठना, बैठना, खाना, पीना, रिश्ते निभाने के तरीके, शिक्षा पद्धति, त्योहार मनाने के तरीके, छुट्टी मनाने के तरीके आदि सब बदलने वाले हैं। इस बदलाव को जितना जल्दी स्वीकार कर लिया जाए, उतना ही अच्छा होगा। युवाओं को इस बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

वर्तमान समय की परिस्थिति को देखते हुए सारे संसार को सुख, शांति एवं समृद्धि से भरपूर करने हेतु प्रतिबद्ध संपूर्ण विश्व का सबसे बड़ा संस्थान ब्रह्माकुमारीज़ वर्तमान समय इस महामारी को जड़ से खत्म करने हेतु लगातार, निरंतर हर एक प्रकार से सेवा में लगा हुआ है।

आज हम चारों ओर नजर दौड़ाते हैं, तो हम अचंभित रह जाते हैं कि इस भगवान की बनाई हुई सुख-शांति से भरपूर हरी भरी दुनिया को यह क्या हो गया है।

वर्तमान समय ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान दुनिया के लिए फरिश्तों से कम नहीं है.....

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के द्वारा दुनिया के हर एक क्षेत्र के लोगों के लिए उपयुक्त सहायता निरंतर की जा रही है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में हर एक वर्ग की सेवा करने के लिए एक बहुत ही सुनियोजित सिस्टम बनाया गया है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान दुनिया के हर एक क्षेत्र से जुड़े लोगों को अलग-अलग वर्गों में बांट कर के उनकी सहायता लिए हर संभव प्रयास कर रही है।

आज के इस समय में संपूर्ण संसार जब इस घोर संकट से गुजर रहा है ऐसे समय में लोगों को खासकर युवाओं को जब घर से बाहर नहीं निकलने दिया जा रहा है, तो वह अंदर ही अंदर स्वयं को छटपटाता सा महसूस कर रहा है। और हर एक मनुष्य आत्मा के मन में अंदर ही अंदर बहुत ही बेचैनी या यूँ कहें की त्राहि-त्राहि मची हुई है।

ऐसे समय में दुनिया के सामने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान दुनिया को इस बहुत ही भयानक कोरोना वायरस नामक महामारी से बचाने के लिए जैसे एक विशेष छत्रछाया के रूप में ओढ़े हुआ है।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान वीडियो एप्लीकेशंस के द्वारा समाज के हर एक वर्ग का अलग अलग ग्रुप बनाकर के उन तमाम लोगों से पर्सनली वीडियो कॉलिंग के द्वारा क्वेश्चन आंसर सेशन रख कर के उनकी हर प्रकार की परेशानियों को सुनकर उन सभी लोगों को यथावत यथार्थ सलाह देने का कार्य निरंतर पिछले 2 महीनों से लगातार करता आ रहा है।

ऑनलाइन वेबीनार के माध्यम से युवाओं को संबोधित करते हुए **जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अतिरिक्त महानिदेशक श्रीमान हेमराज सूर्यवंशी जी** ने कहा कि युवाओं को नियम एवं संयम अपने जीवन में धारणा करनी होगी। एवं सरकार द्वारा बनाए हुए नियम, दैनिक जीवन के नियम, खानपान एवं स्वास्थ्य को संयमित करना होगा। युवाओं को किसी के बहकावे में ना आकर, किसी की बुरी संगत में ना पड़कर अपना कार्य करना होगा। क्योंकि वर्तमान समय युवाओं को एक ओर जहां अपनी पढ़ाई या नौकरी भी करनी है, साथ-साथ इस महामारी से भी बच कर रहना है। एवं परिवार एवं समाज के प्रति भी उनकी जो जिम्मेवारी है उसका बैलेंस भी बना कर रखना होगा। अतः इस कार्य हेतु युवाओं को मिसाल प्रस्तुत करनी चाहिए।

कार्यक्रम में जुड़े हुए युवाओं ने भी अपनी-अपनी बातों को बढ़-चढ़कर रखी :-

ओंकार आवटी : हम युवाओं के हाथ में आने वाले कल की जिम्मेवारी है। लॉकडाउन के इस समय में हम युवाओं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से सहायता करनी चाहिए। आज के समय में लोगों को हिम्मत की आवश्यकता है और हमें लोगों को हिम्मत देनी चाहिए।

नेहा देशमुख:- जैसा कि हम जानते हैं कि भारत में युवाओं की संख्या बाकी देशों से ज्यादा है। हमारे हेल्थ वर्कर निःस्वार्थ भाव से बिना भेदभाव कार्य कर रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि आप लगातार टीवी, मोबाइल पर निगेटिव न्यूज़ सुन रहे हैं, जो आपके दिमाग पर नेगेटिव असर कर रहा है। आपका मूड चेंज हो जाता है और नेगेटिव भी हो जाता है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि टीवी, मोबाइल में वही देखें वही ग्रहण करें, जिसकी हमें जरूरत है। साथ में वही चीजें शेयर करें जो खुद के लिए, समाज व देश के लिए भलाई का कार्य करे।

माधुरी अवटी:- कहते हैं युवा एक उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं। और यह मार्ग हमें आज के समय से ही निकालना होगा, ताकि कल सारा विश्व उज्ज्वल भविष्य देख सके। वर्तमान समय में युवाओं की स्वयं की शारीरिक एवं मानसिक और दूसरी जिम्मेदारी समाज (विश्व) की जिम्मेदारी तो है ही लेकिन इन दो जिम्मेदारियों के साथ अगर अध्यात्म भी जुड़ जाए तो युवा अपनी दोनों जिम्मेदारियों को और अच्छे से निभा सकेंगे। क्योंकि अध्यात्म से मानसिक स्थिति सुधरती है और मानसिक स्थिति सुधरने से शारीरिक स्थिति स्वस्थ हो जाती है, तो इससे आज की समस्या पर ही नहीं, आने वाली समस्याओं पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। युवाओं में शारीरिक इम्यूनिटी तो ज्यादा होती ही है किंतु सिर्फ शारीरिक नहीं मानसिक और आध्यात्मिक इम्यूनिटी भी अधिक होती है बस देर है तो इसे पहचान कर कार्य में लगाने की और यही आज के वर्तमान समय की मांग है।

हितेशा गाड़े:- युवाओं के लिए यह जिम्मेदारी के साथ ही साथ उनका कर्तव्य है कि वह लोगों में इच्छा शक्ति प्रदान करें, उन्हें प्रोत्साहन दे, लोगों से दूरियां बनाए रखें। अपनी जिम्मेदारी को समझें उन्हें समझाएं कि शारीरिक स्वास्थ्य के साथ ही साथ मानसिक शक्ति प्रबल रखें और यही सब बातें समझते हुए अपने कर्तव्य को और श्रेष्ठ बनाएं।

कार्यक्रम का कुशल संचालन बी.के. रावेन्द्र भाई जी ने किया।